RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

विदेशों में हिन्दी कहानी – साहित्यः सृजन भूमि एवं उपस्थिति

डा० मृदुला प्रसाद

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आर०एल०एस०वाई कॉलेज, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

विदेशों में हिन्दी कहानी साहित्य ने अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। एक नये परिवेश और भिन्न संस्कृति के बीच जीवन यापन करते भी कथाकारों को उनकी रचनाओं ने उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाया है। उनकी कहानियों में एक ओर देश छोड़ने की पीड़ा व्यक्त है, तो दूसरी ओर दो परस्पर भिन्न संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न मार्मिक संवेदनाओं का वर्णन है। वे अपने अस्तित्व को बचाये रखने के दंश से गुजरते हुए भी दिखायी पड़ते हैं।

ऐसे साहित्यकारों का साहित्य न केवल परिमाण की दृष्टि से वरन् गुणवत्ता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों की जीवन–शैली भारत से भिन्न हैं, वे अपने ढंग से स्वयं को वहाँ की जीवन शैली में ढालने के लिए प्रयत्नरत रहते हैं। उनकी समस्याएँ भारतीय समस्याओं से सादृश्य के बावजूद अलग प्रकार की हैं। स्वाभाविक है कि उनका निदान भी उसी परिप्रेक्ष्य में संभव है। आरंभ में वे भिन्न सांस्कृतिक परिवेश में एक प्रकार के सांस्कृतिक आधात का अनुभव कर रहे थे, लेकिन जैसे जैसे समय बीतता गया परायी संस्कृति में घुल–मिल जाने की उन्होंने कोशिशें की।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में भारतीय साहित्यकारों का विश्वव्यापी प्रसार हुआ और इसके साथ–साथ हिन्दी साहित्य का महत्त्व भी विश्व में बढ़ता गया।

कथाकारों ने अपनी कहानियों की विषयवस्तु के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रचारित किया ।

भारतवंशी समुदाय सबसे पहले मॉरिशस, गुयाना, फिजी, सूरीनाम, ब्रिटेन आदि देशों में ले जाये गये और पीढ़ी–दर–पीढ़ी वहाँ रहते हुए वे वहीं के निवासी हो गये, लेकिन उन्होंने भारतीय संस्कृति को बचाये रखा अपने लेखन से उन्होंने भारतीय दृष्टि से कथा – समस्याओं का हल प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में मॉरिशस प्रसिद्ध कथाकार अभिमन्यु अनत के लेखन को देखा जा सकता है जिन्होंने साहित्य को एक नया आयाम दिया है। श्मॉरिशस के प्रेमचंदश अभिमन्यु– अपनी कहानियों में शोषण, दमन, बेरोज़गारी की समस्याओं का चित्रण करते हैं। भारत की मिट्टी से ही उनकी कहानियाँ जन्मती हैं और भारत की ही तरह वहाँ के वर्ग संघर्ष, शोषण के इतिहास, श्रमिकों की विवशता को दर्शाति है। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'मातमपुर्सी' के इस वाक्य को देखा जा सकता है ''उस औंसाल भात की गंध और उसमें आ गये खट्टेपन की परवाह किये बिना मारियों ने उसे चपेट ही लिया। भूख के मारे तो वह छूछा भात भी हज़म कर जाता था''। यह प्रसंग प्रेमचंद जैसे कथाकार की कई कहानियों को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। वहाँ के कथाकारों की कहानियों में भी कथानायक या नायिका के हृदय परिवर्तन के द्वारा कथा समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। सूरीनाम फिजी, त्रिनिदाद आदि देशों में रहने वाले भारतीय समुदायों ने रामचरितमानस, हनुमान चालीसा जैसे ग्रंथों से प्रेरणा लेकर विभिन्न प्रसंगों पर आधारित कहानियों की रचना की है।

बाद में चलकर साठ के दशक में अमेरिका, इंगलैंड, नॉर्वे, कनाड़ा जैसे–देशों में रहने वाले भारतीय कथाकारों ने हिन्दी को एक नयी पहचान दी। ब्रिटेन की कथाकार शैल अग्रवाल की कहानी आपसी में परंपरा तथा आधुनिकता के अंतर्द्वन्द्व में फंसी नायिका पम्मी अपने घर परिवार की मान– मर्यादा के लिए अपनी खुशियों का त्याग करती है। ''आदत डाल लो तो संमुदर में यह कहती है तैरती मछली भी खुशी–खुशी काँच के बॉल में तैरने लग जाती है '' अंततः पम्मी हेमंत के साथ जाने को वह तैयार हो जाती है और दादी भी

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

उसकी वापसी के लिए अपनी सहर्ष सहमति देती है। इस प्रकार पुरानी पीढ़ी की दादी नये परिवेश में ढलती है जो कहीं न कहीं बदलते समाज के रूप को दर्शाता है। इसी प्रकार, लंदन की ही उषा राजे सक्सेना जी की कहानी ''बीमा'' बीस्माट एक बिलकुल नये कथन से पाठकों को परिचित कराती है। कहानी में एक शिक्षिका एक अर्धविक्षिप्त बालक बीमा बीस्माट को एक ज़िम्मेवार ब्रिटिश नागरिक बनाने की कड़ी मेहनत, लगन और समर्पण को प्रस्तुत करती कथा है। इतना ही नहीं, नारी समस्या पर सभी प्रवासी कथाकारों ने लिखना शुरू किया है वे साहित्य के जरिये स्त्री के हर रूप को शब्दों में बाँध बारीकी से दर्शाने की ईमानदार कोशिश कर रहे हैं। लंदन के कथाकार तेजेन्द्र शर्मा की कहानी श्देह की कीमत में अपने पति हरदीप को जापान में खो चुकी पम्मी अपने भविष्य और दुःख की परवाह नहीं करती लेकिन उसका पास बेटे की मौत के बाद मिले चंदे पैसे बहू को न मिल जाये इसलिए अपने दूसरे बेटे से विधवा बहु को चादर ओढ़ाने की बात करता ताकि पैसे घर में ही रह जाये । औरत का यह स्वार्थी चेहरा, पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। अमेरिका के उमेश अग्निहोत्री की कहानी ''क्या हम दोस्त नहीं रह सकते'' में स्त्री का नया रूप है जो सामजिक रूप है। इस कहानी की नायिका विजया गृहणी को साथ अपनी आज़ादी भी बनाये रखना चाहती है और इसलिए 'फ्राइडे गर्ल्स नाइट' में जाना चाहती है, लेकिन जब उसका पति जय उसे जाने से रोकता है तो वह कहती है – तुम जानते हो मैंने तुमसे शादी क्यों की थी, जबकि मैं तुमसे ज़्यादा हैंडसम व अच्छे डीलडौल वाले लड़कों से शादी कर सकती थी.. पर उनकी तुलना में तुम मुझे कहीं अधिक कद्दावर इंसान दिखें।.....

तुम मुझे अधिक संवेदनशील और उदार जान पड़े थे । शादी से पहले तुम मुझे मेरी आज़ादी देते थे।'' यह कहते हुए वह जय को छोड़ बाहर चली जाती है। ये भारतीय साहित्यकार भारत में पहले से ही अपनी पहचान बना चुके थे। इसलिए इन कथाकारों का उद्देश्य था भारतीय समाज और संस्कृति से अमेरिका वासियों या यूरोप वासियों की भारतीय सोच को प्रभावित करना आरंभिक प्रवासी कहानियों की विषयवस्तु अपनी पहचान के संकट से गुजर रही थी लेकिन आज विदेशों में बसे हिन्दी कथाकारों ने अपने लेखन से अपनी स्वतंत्र पहचान बना ली इसलिए कथा विषय और भाषा पर विदेशों का प्रभाव भी है, लेकिन फिर भी उनका अपना ख़ास महत्त्व है। परंपरा और आधुनिकता के अंतर्द्वन्द्व में फंसे इन कथाकारों ने दोनों में सामंजस्य स्थापित कर सृजन – भूमि के महत्त्व को स्थापित किया है।

संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक ग्रन्थः–

1. विश्व हिन्दी रचना, सं० डॉ० कमल किशोर गोनका प्रकाशन 2003, पृ०सं० 109
2. शोध दिशा– अक्टूबर–दिसंबर अंक 2010
3. प्रवासी आवाज़ – डॉ. अंजना संधीर
4. सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन पत्रिका

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)